क्लेमेंस ज़ेटज़

माएँ

एक अंधेरी पिछली गली में हाल में दिवालिया हो चुके एक फिश रैस्टोरेंट के पीछे खड़ी हैं, वे माएँ। छः या सात बुज़ुर्ग महिलाएँ 1950 के ज़माने के लंबे रेनकोट पहने हुए। कुछ ने ग्राहकों में लोकप्रिय कटोरा नुमा टोपियाँ पहन रखी हैं, जबकि औरों का पूरा भरोसा कर्लर्स पर हैं, जो उनके बालों में क्रिसमस ट्री पर ठंड से जमी हुई सजावट की तरह लटक रहे हैं। उनके हाथों पर तने हुए महीन लेस के दस्ताने चमकीले सितारों से सजे हैं, जो उन मुर्दों को पहनाए जाते हैं जिन्हें एक पूरे दिन रिश्तेदारों के अंतिम दर्शन के लिए लेटे रहना पड़ता है। नवंबर का महीना है, मौसम गीला, ठंडा और कठोर, और पुलिस की गश्त अब कम हो गई है। कुछ मिनट पहले एक पुलिस की गाड़ी गुज़री और अफसरों ने शीशा नीचे कर के थोड़ी देर औरतों से बातचीत की। उनमें से एक ने कुछ चॉकलेट के बार भी बांटे। फिर वे दाढ़ी वाले लोग आगे निकल गए। अब तो यकीनन वे चार घंटे से पहले दिखाई नहीं देंगे। हो सकता है कि वे बिलकुल ही न लौटें।

सारी रात महिलाएँ चहलकदमी करती रहती हैं। ग्राहकों को लुभाने के लिए अपने रेनकोट मे लगे रंग बिरंगी खांसी की गोलियों जैसे बटनों से खेलती हैं, वे अपने कुछ ज्यादा ही बड़े पढ़ने के चश्मों को माथे पर खिसका लेती हैं या फिर अपने नकली चमड़े के हैंडबैग में मॉइस्चराइज़िंग क्रीम ढूंढती हैं। और कभी कभी वे अपनी उंगली उठाकर हिलाती हैं, डाँटने के अंदाज़ में। इस इशारे को सब समझते हैं और यह लगभग हमेशा असर करता है।

लगभग बीस साल का एक नौजवान उन महिलाओं के करीब आता है। उसने अपनी साईकल कुछ दूर खड़ी कर दी है और वह दबे पाँव उस अंधेरी गली के साथ साथ चलता है। उसके बाल करीब एक हफ़्ते से नहीं धुले हैं, तेल और उँगलियों के धब्बों से उसका चश्मा गंदा है, और जैसे ही वह अपने जूते का तस्मा बांधने के लिए एक पल के लिए रुकता है, तो उसके जैकेट के पिछली ओर एक छोटा सा चौकोर फटा हुआ हिस्सा दिखाई देता है। वह किसी माँ से बात करने से पहले अपना मोबाइल बंद कर देता है, यहाँ तक कि इंतज़ार करता है कि मोबाइल का डिस्प्ले बंद हो जाये और उसके बाद ही आगे बढ़ता है। उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसकी बनियान पैंट से बाहर निकली हुई है और उसके ऊपर के होंठ और बायें गाल पर चॉकलेट के धब्बे हैं । उसका मुँह ऐसा नहीं लगता कि उसे अक्सर इस्तेमाल में लाया जाता हो। यह बिलकुल मुमकिन है कि उसने पिछले कुछ हफ़्तों से किसी से बात ही न की हो। कुल मिलाकर सीधा लगता है, मगर कुछ घबराया हुआ भी। एकदम उन आदमियों जैसा, जो अक्सर इस संकरी गली में उस बंद हो चुके फिश रैस्टोरेंट के पीछे भटकते हैं।

इरमा पहली औरत है जो उसके करीब जाती है।

"हैलो" वह बोली ।

पहले वह उससे दूर रहा, जैसे कि उसकी कोई दिलचस्पी ही न हो, फिर रुक गया और उसे एक तरफ से ध्यान से देखा।

"फिलिप" वह बोला और अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"इरमा माँ" इरमा ने कहा।

माँओं में वह सबसे बड़ी है। बाकी सब उसे अक्सर पहला ग्राहक लेने देती हैं, क्योंकि वे सब कहीं न कहीं इरमा की एहसानमंद हैं। मगर नौजवान के चेहरे के हाव भाव से साफ है कि उसे इरमा में कोई दिलचस्पी नहीं। शायद उसका स्कार्फ है, जो अब उसका ट्रेडमार्क बन गया है, मगर माँ-जैसा नहीं लगता, बल्कि बाज़ार में किसी गरीब, बेचनेवाली के जैसा, कुछ कस कर बाँधा हुआ।

अगाठः ने मौका देखा और उस नौजवान के तरफ बढ़ी। उलरिकः उसके पीछे पीछे आई।

"गिद्ध मंडरा रहे हैं" इरमा ने हल्के से कहा और अपना चौड़े फ्रेम वाला चश्मा हाथ में ले लिया। "हाँ, तो क्या है?"

"हैलो" नौजवान ने अगाठः और उलरिकः से कहा। "गुड ईवनिंग"।

"कितना प्यारा लगता है, है ना?" इरमा ने कहा और अपने चश्मे से उसके डरे हुए चेहरे की ओर इशारा किया। "लेकिन उसके मुंह पर चॉकलेट के धब्बे हैं।"

उसने अपने रेनकोट की जेब से रुमाल निकाला और थूक से गीला करके नौजवान के गाल को पोंछ दिया।

"अब कुछ ठीक हुआ।"

"मुझे तो वह प्यारा नहीं लगता" अगाठः ने टोका। "सिर्फ ऐसा बन रहा है। वास्तव में वह एक निकम्मा लड़का है, जो अपने माता पिता से सिर्फ त्योहारों पर मिलता है या फोन करता है। है कि नहीं?"

उसके चेहरे से वह समझ गई कि उसका निशाना ठीक लगा था। नौजवान हलके से मुस्कुराया। उसे इसकी ज़रूरत है, अगाठः ने महसूस किया, सख़्त ज़रुरत है।

"मेरा नाम फिलिप है" नौजवान ने कहा। "कितने पैसे ..."

"किस लिए?"

"एक रात के लिए।"

"पूरी रात?" अगाठः ने पूछा।

"हाँ"

"तीन सौ।"

नौजवान ने ज़मीन की ओर देखा और सिर के पीछे हाथ फेरा।

"दो सौ कर दें?" उसने झिझकते हुए पूछा।

"ध्यान से सुन, निकम्मे कहीं के" अगाठः ने कहा, "उलरिकः के साथ शायद यह चलेगा, पर मेरे साथ नहीं। तीन सौ या कुछ भी नहीं।"

"ओह", नौजवान ने कहा। "प्लीज। मैं ... "

"दो सौ सत्तर" अगाठः कुछ सोच कर बोली। "इस से कुछ भी कम बेइज्जती होगी।"

"क्या मैं कार्ड से भी पेमेंट कर सकता हूँ?" नौजवान ने पूछा।

तीनों माएँ हँस पड़ीं, अगाठः सब से ज़ोर से।

"हाँ, ज़रूर, मेरे बच्चे" वह बोली। "यह तो हम कर ही लेंगे। हम बस एक एटीएम से होते हुए जाएंगे, पक्का।"

नौजवान का चेहरा चमक उठा।

"ठीक है, फिर।"

"बुद्धू कहीं का" अगाठः बोली और उसकी बाँहों में बाँहें डाल दी।

वे वहाँ से निकल जाते हैं। बाकी माएँ उन्हें जाते हुए देखती हैं। और फिर से लगन से धीरे धीरे आगे पीछे की कवायद पर लग जाती हैं। कुछ मिनटों बाद बारिश शुरू हो जाती है और इरमा अपने पुराने ज़माने का छाता खोल लेती है, जिसपर हँसता हुआ चंद्रमा बना है। बाकी माएँ सिमट कर इकट्ठा हो जाती हैं ताकि वे भीग न जाएँ।

"यह अगाठः" ऊलरिक़ः ने कहा "ऐसी कोई रात नहीं बीतती जिसमें ऊसे एक बेटा न मिला हो।"

"यह तजुर्बे की बात है। थोड़ा इंतज़ार करो, जल्दी ही तुम्हारे साथ भी ऐसा होगा।"

"ऐसा हो तो अच्छा होगा। मेरे लिए और कुछ तो है नहीं। इसके अलावा कोई कहाँ जाए? और बेटियों की देखभाल करना मुझे पसंद नहीं, हालांकि मैंने सुना है कि तब तो कम से कम घर के अंदर ही ठहरना होता है, ठण्ड और बारिश में नहीं।"

"चलो छोड़ो" इरमा ने कहा। बाकी माएँ शिकायत करें, यह ऊसे अच्छा नहीं लगता। "देखो, बारिश फिर से रुक गयी है। सिर्फ एक हल्की सी बौछार थी।"

माएँ फिर अलग अलग हो जाती हैं। कहीं पर किसी घंटा घर में सवा बारह का घंटा बजा। और कुछ देर बाद एक कार का भोंपू नींद में चीखा। बाकी शांती है। अँधेरा बढ़ने लगा और इक्का दुक्का तारे आसमान में दिखाई देने लगे।

जब वह नौजवान हँसता है, तो अपने मुँह के आगे मुट्ठी रख लेता है, जैसे कि वह खाँसने वाला हो। अगाठः को यह अच्छा लगा। ऊसकी मदद करने की इच्छा को परखने के लिए, ऊसने ऐसा दिखाया कि ऊसे सीढ़ियाँ चढ़ने में काफी दिक्कत आ रही है। फिलिप ने पहले तो खड़े होकर ऊसकी ओर ताका, फिर ऊसे लगा कि ऊसकी मदद करनी चाहिए, और ऐसा किया, जहाँ तक ऊससे हो पाया। वह थोड़ा-बहुत बनता ज़रूर है, अगाठः ने सोचा, कुछ बेढंगा सा, पर खैर। ऊसकी नेम-प्लेट पर लिखा है : ऊलहाइम। एक नाम, जो अगाठः को कुछ कहता है। शायद कोई पहले का ग्राहक? कितने सारे बच्चे हैं, ऊसने सोचा।

फ्लैट के अंदर वह ऊसका रेनकोट ऊतार कर कपड़ों के स्टैंड पर टांग देता है। अगाठः ने थोड़ा इधर ऊधर देखा। एक बिल्कुल छात्रों वाला फ्लैट, गुफा सा और बासी बदबू वाला, जैसे जवान होते बच्चों की चादरें। एक गलत ढंग से मोड़ा हुआ इस्त्री करने का स्टैंड सोफ़े के ऊपर तिरछा पड़ा है।

"तो यही है" वह बोला "यहाँ रहता हूँ मैं।"

"मुझे पता था, तुम बड़े होकर ज़रूर कुछ बनोगे", अगाठः ने कहा।

फिलिप हँसा। यह कोई दिल से निकली हँसी नहीं बल्कि ऊसके चेहरे की एक हरकत जिसे वह फ़ौरन दबा नहीं पाया। शायद पैसे तय होने से पहले ऊसे चैन नहीं आने वाला, अगाठः ने सोचा। वह ऊसकी मुश्किल आसान करने का फैसला करती है और अपना हाथ आगे बढ़ा देती है। ऊसने ऊसकी ओर देखा, ऊसे एक दो सेकंड लगे, फिर वह समझ गया और दूसरे कमरे में चला गया।

वापस आ कर उसके हाथ में ढाई सौ के नोट थमा दिया। फिर बीस का नोट ढूंढने लगा और परेशान हो गया क्योंकि उसे मिला नहीं। घर आते वक़्त वह किसी भी एटीएम पर नहीं रुका था, अगाठः को याद आया।

-"चलो ठीक है" वह बोली। "तुम्हारे खाने के लिए कुछ बनाऊँ क्या? पहले जैसे?"

फिलिप की राहत भरी प्रतिक्रिया से उसे भी चैन मिला। उसने अपने बालों में हाथ फेरा, हँसा, नज़र हटाई और फिर से उसकी ओर देखा। फिर कहा:

"हाँ। हाँ, अच्छा रहेगा।"

अगाठः रसोई में जाती है, एक एप्रन ढूंढ कर बांध लेती है और फ्रिज का मुआयना करती है। वह लगभग खाली है। उसे इसी बात की उम्मीद थी, पर मक्खन तक नहीं है, इस कारण उसे कुछ गुस्सा आया। उसने ऑमलेट बनाने का फैसला किया। तजुर्बे से उसे पता है कि ग्राहकों को ज़्यादा अच्छा लगता है जब वह नहीं बताती कि क्या बन रहा है और सीधा पकाने लगती है, जैसे और कुछ उसके दिमाग में आया ही न हो। इस तरह एक घरेलूपन सा पैदा होता है। फिलिप रसोई की एक कुर्सी पर बैठ गया है।

"अच्छा" अगाठः ने कहा और एक अंडा तोड़ कर गाढ़ी ज़र्दी को एक बड़े से नापने वाले ग्लास में डाल दिया, "तो जरा मुझे बताओ कि तुम आजकल क्या कर रहे हो"।

"नौकरी में?

उसकी आवाज़ कुछ असहज ढ़ंग से खुशनुमा है, मानो उसे विश्वास ही न हो रहा हो कि सब ठीक से हो गया था। जैसे कि वह मान कर चला था कि बहुत कठिनाई या अपमान झेलना पड़ेगा ।

"हाँ।"

"मैं अभी भी पढ़ रहा हूँ।"

"क्या पढ़ रहे हो?"

"अरे, अरसे से। भौतिकविज्ञान और रसायनशास्त्र।"

"भौतिकविज्ञान और रसायनशास्त्र" अगाठः ने प्रभावित होकर दोहराया और अपने हाथ एप्रन से पोंछे।

यह तनी रस्सी पर चलने की तरह है, उसे सचेत रहना होगा कि उसके हाव भाव ज्यादा स्पष्ट या घिसे-पिटे न लगें। मगर ऐसा नहीं लगता कि फिलिप इन सब चीज़ों पर ध्यान दे रहा है।

"हाँ, तुम तो हमेशा से तकनीकी चीज़ों में अच्छे थे" वह बोली।

"ठीक है" फिलिप ने कहा, "मगर मुझे अब भी यकीन नहीं कि क्या यह वाकई मेरे लिए ठीक है। और पढ़ाई में वैसे भी बहुत टेंशन है।"

"ऐसा क्यों?"

"ये सारी डेडलाइनें, जिन्हें निभाना पड़ता है । और लगातार कुछ न कुछ बदल दिया जाता है, और फिर एकदम से किसी कोर्स के क्रेडिट को गिना नहीं जा सकता और फिर डीन के दफ्तर में जाओ और उन पागलों के साथ लड़ाई करो। बस टेंशन ही टेंशन।"

"लेकिन तुम्हारा कोर्स तो जल्दी ही ख़त्म होने वाला है न?"

"भगवान का शुक्र है, हाँ। कोई एक साल और।"

अगाठः के ऑमलेट अच्छे बन गए। एकदम सही सुनहरे भूरे, जिनसे भूख बढ़ जाती है। फिलिप आँखें बन्द करके खाने लगा। अगाठः का अंदाज़ा है कि वह यह सब पहली बार कर रहा है और उसे पता नहीं कि उसे किस तरह पेश आना चाहिए।

अगाठः सख्ती से बोली, "अब समय आ गया है कि तुम अपनी पढ़ाई ख़त्म करो।"

फिलिप ने अपनी आँखें खोली और उसकी ओर भौंचक्का होकर देखा। फिर वह मुस्कुराया और कालीमिर्च की डिबिया लेकर अपनी लगभग खाली प्लेट पर छिड़कने लगा।

"जल्दी खा लो।" वह उसे झिड़कती है, "तुम बहुत ही दुबले पतले हो।"

उसने खुद को ऊपर से नीचे तक देखा।

"क्या तुम भी वैसा दिखना चाहते हो जैसे वे सारे निकम्मे लोग, वे चलते फिरते ठूँठ, जो अपना सारा पैसा सिर्फ किताबों पर खर्च करते हैं?"

खाना खत्म होने के बाद वह उसका फ्लैट थोड़ा-बहुत साफ करती है। हर तरफ धूल है और वह उसके आलस के लिए उसे झिड़कती है। वह जानती है कि इस तरह की हल्की फुलकी झिड़की

जवान मरदों को चैन दिलाती है। जुराबें फर्श से उठाते हुए वह इतनी धीरे और कठिनाई से नीचे झुकी कि बदन की इस हरकत ने ही फिलिप को कसूरवार ठहरा दिया और उसने अपना मुँह मोड़ लिया। अगाठः ने उसके मैले कपड़े, जो हर तरफ कुर्सियों और बिस्तर पर बिखरे पड़े हैं, वॉशिंग मशीन में डाल दिए और उसे बताया कि कितना कपड़े धोने का पाउडर लेना चाहिए, जिससे कपड़े साफ तो हो जाएँ, लेकिन साबुन की गंध न आए। घर कुछ ठीक-ठाक करने के बाद, वह टीवी के सामने बैठ गई।

एक छोटी मेज़ पर उसे एक टीवी पत्रिका मिली, वह उसके पन्ने पलटने लगी और एक हाइलाइटर से (जो उसे इरमा ने एक महीने पहले दिया था) अलग अलग टीवी सीरियलों को अंडरलाइन करना शुरू कर दिया।

"आ, मेरे पास आकर बैठ", वह बोली।

फिलिप ने उसकी बात मान ली।

"और? क्या तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?"

"मेरी?"

फिलिप को हँसना पड़ा। अपना पढ़ने का चश्मा माथे पर सरकाते हुए अगाठः ने उसकी ओर देखा, जैसे वह कहना चाहती हो कि मेरा यह जानने का हक़ है। पर वह ठीक से हो नहीं पाया। फिलिप चौंक गया और अचानक गंभीर हो गया।

"नहीं, अभी तो नहीं है" उसने अपने घुटनों की ओर देखते हुए कहा। "वह छोड़ गयी ... तीन हफ़्ते पहले।"

"वह वैसे भी तुम्हारे स्तर से काफी नीचे थी।"

"ओह, अच्छा। नहीं। नहीं।"

"सच में। वह तुम्हारे लिए ठीक नहीं थी। बहुत रौब झाड़ती थी।"

"हूँ।"

फिलिप का चेहरा जड़ हो गया। वह नाटक से बाहर निकल गया है, अगाठः के अंधेरे में बेसबब तीर चलाने से शायद चिढ़ गया होगा। अगाठः जान गई कि उसने कुछ ज़्यादा ही हिम्मत दिखा दी। पर मुश्किल है, खुद को रोकना, जब इंसान को सही राह पर होने का अंदाज़ा हो। उसने विषय बदल दिया और उसके भविष्य की योजनाओं के बारे में पूछने लगी। वह अपने आप को पाँच सालों में

कहाँ देखता है? अपना आखिरी शोध निबंध किस पर लिखेगा? उसे क्या लगता है, वह कब उसे वो पोता देगा, जिसका उसे इतना इंतज़ार है? फिलिप ने सभी सवालों का शालीनता से जवाब दिया, मगर जब तब घड़ी की ओर ताकता रहा। अगाठः जानती है कि उसे अपनी पकड़ और मज़बूत करनी पड़ेगी, ताकि वह खो न जाए।

"क्या तुम सुन भी रहे हो? फिलिप, मैं तुमसे बात कर रही हूँ!"

"हाँ हाँ", वह बोला और सोफ़े से खड़ा हो गया।

"बैठ जाओ। मैं तुम्हें एक बार एक पूरे दिन के लिए मिलती हूँ और तुम्हारे पास मुझसे कहने को सिर्फ एक एक शब्द ही है। मुझे अफसोस है कि तुम्हारी ज़िंदगी इतनी दिलचस्प नहीं। मुझे अफसोस है कि तुम्हारे पास कुछ सुनाने को नहीं। पर इसके लिए मैं जिम्मेवार नहीं हूँ। मैंने तुम्हें इसलिए बड़ा नहीं किया था।"

फिलिप बैठ गया। वह हारा हुआ लग रहा है।

"क्या तुम मुझसे नाराज़ हो?" उसने पूछा।

भगवान का शुक्र है, अगाठः ने सोचा। वह पिघल रहा है।

"नहीं, मैं तुमसे बिलकुल नाराज़ नहीं हूँ" वह बोली।

देर हो गयी है। फिलिप उसके बगल में सोफ़े पर बैठा उसके साथ टीवी देख रहा है। लेकिन अगाठः थक गयी है और उसे सो जाने को कहती है। वह उसकी बात मान लेता है और उसे चादर भी ओढ़ाने देता है। वह उसे ठोड़ी तक चादर ओढ़ा देती है और देखती है कि कैसे वह नरम चादर के नीचे चैन से अंगड़ाई लेता है। उसने गहरी सांस खींचकर एक तरफ करवट ले ली।

"ठीक से सोना", वह धीरे से बोली।

बच्चों के कमरे की लाइट और दरवाजा धीरे से बंद करने के बाद, उसे पता है कि उससे अब क्या उम्मीद की जाएगी। वह बगल के कमरे में बैठ गई और टीवी देखने लगी। बहुत से ग्राहकों को यह अच्छा लगता है कि टीवी की नीली रौशनी नीचे दरवाजे की दरार से दिखती रहे। रौशनी के झिलमिलाने का मतलब है कि कोई है, कोई जगा हुआ है और फ्लैट की देखभाल कर रहा है। वह चैनल बदलती रही और उसे कुछ दिलचस्प प्रोग्राम मिल गए। जैसे पुरानी कोलूम्बो-जासूसी-सीरियल की एक कड़ी, एक कॉमेडी, अभिनेत्री क्रिस्टियानः होरबिगर के साथ। उसने खुद से पूछा कि क्या फिलिप उसे सुबह अपनी साईकल उधार देगा। उसकी कुछ सहकर्मी तो ऐसे मौके पर पैसे के लिए

पूरा घर छान मारती, मगर यहाँ कुछ ख़ास मिलने वाला नहीं है। इसके अलावा ऐसा अक्सर हुआ है कि कुछ ग्राहक देर रात में नींद से उठ कर बगल के कमरे में माँ के पास चले जाते हैं, अपना सिर उनकी गोद में रखने के लिए। ज़्यादातर के लिए यह एक्सट्रा सर्विस ही असली बात है। सबसे अच्छा यह है, अगाठः ने अपने हैडफोन लगा कर सोचा, जब कोई अगली सुबह तक भरोसा दिलाते हुए बस चुपचाप बैठा रहे। तभी वह सचमुच प्रॉफेश्नल होता है।

और वाकई फिलिप दो बजे के आसपास अपने कमरे से निकल कर आया, उसके पायजामे का दाहिना पाँयचा घुटने तक चढ़ा हुआ है और उसे उसको हिलाना पड़ा, ताकि वह नीचे गिर जाए।

"मुझे नींद नहीं आ रही" वह बोला ।

अगाठः ने उसकी ओर प्यार से देखा और अपने साथ के सोफा सीट की ओर इशारा किया। फिलिप बगल में बैठ गया।

"क्या बात है?"

"ओह, बहुत कुछ, जो मेरे दिमाग में चल रहा हैं" उसने कंधे उचकाते हुए कहा। "सब उलझा हुआ।"

फिर उसने अपने-आप को ढीला छोड़ दिया और उसका सिर अगाठः के कंधे को छूते हुए उसकी गोद की ओर बढ़ने लगा। उसने उसे पकड़ लिया।

"इसकी कीमत अलग लगेगी" वह फुसफुसाई।

इस सूचना को उसने इतने प्यार से और माँ-जैसे भाव में कहा, मानो वह खुद उस प्रदर्शन का हिस्सा हो। यह काम कर गया, फिलिप ने सिर हिलाया।

"तीस" अगाठः धीरे से बोली।

फिलिप ने अपना थकान भरा सिर उसकी गोद में रख दिया। वह आँखे बंद करके बुदबुदाने लगा।

"तीस, चालीस, पचास ..."

वह दस दस करके आगे गिनता गया, नब्बे तक पहुँच कर रुक गया, अपने होठों पर जीभ फेरी और फिर ऐसा लगा कि वह सो गया। मगर अगाठः को पता है कि वह शायद अभी भी जगा हुआ है। उसे ऐसे नौजवानों का कुछ तजुर्बा है, जो सिर्फ दिखावा करते हैं कि वह सो रहे हैं। उसके साँस लेने के तरीके से, उसके पलकों की जगी हुई घबराहट से और खासकर उसके टेंटुए की हरकत से वह यह समझ गई। सोए हुए इंसान कम निगलते हैं। जैसा भी हो उसे यह अच्छा लग रहा है और उसे फ़र्क नहीं पड़ता कि इस सर्विस के लिए उसे और भी पैसे देने होंगे। हाँ, ऐसा ही होगा, अगाठः

ने सोचा, उसे सबकुछ मालूम है, वह यह पहली बार नहीं कर रहा। उसे उसका मासूम चेहरा याद आया, जब वह पैसे ढूंढ रहा था और वह मुसकुराई। शुरू-शुरू में अगाठः कभी-कभी इसे अनदेखा छोड़ देती और ग्राहकों को मुफ्त में अपनी गोद में सोने दिया करती। उनमें से ज़्यादातर इस कारण एहसानमंद थे और बाद में उसके पक्के ग्राहक बन गए थे, लिहाजा इस निवेश से एक किस्म फायदा ही हुआ, अगाठः ने सोचा। हर मामला दूसरे मामले से अलग ही होता है। कई जवान मर्दों को देख कर लगता है कि उन्हें इसकी ज़्यादा ज़रूरत है। उनके बालों की मांग टेढ़ी होती है, पैंट बहुत ढीली, और किसी न किसी फिल्म के बारे में बात करते रहते हैं, जिनका नाम अगाठः ने कभी नहीं सुना, या फिर इस बारे में कि वह अपने भाई बहनों से कभी नहीं मिलते क्योंकि वे किसी और शहर में रहते हैं। उन पर कोई जरा भी नाराज़ नहीं हो सकता। उन्हें पूरा पैकेज लगभग मुफ़्त में ही दे दिया जाता है। जाहिर है, सिर्फ लगभग ही।

अगाठः ने आह भरी और उस संतुष्ट इंसान को गौर से देखा, जिसका कान उसके घुटनों के बीच है। वह यकीनन उन आदमियों में से नहीं है जिन्हें वह लगभग मुफ्त में कुछ दे दे। उसे कीमत चुकानी होगी, अगर उसने मना किया, तब वह जानती है कि किसे फोन करना होगा। मगर फिर भी उस नौजवान में कुछ अलग है, ऐसा कुछ, जो वह अपने आप को समझा नहीं सकती, कई सालों के तजुर्बे के बावजूद। हैरानी की बात है, मगर उसे यह कहने की इच्छा हो रही है कि वह भविष्य में उसकी सेवाओं पर पैसा खर्च न करे। उसे अपना ख्याल रखना चाहिए, अपने को लेकर लापरवाह नहीं होना चाहिए। और उसे अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिए और जीवन को राह पर लाना चाहिए। अगाठः ने अपना हाथ उसके सिर के पीछे रखा और धीरे से उससे बात करना शुरू किया, जबकि उसे मालूम है कि वह इस दौरान सच में सो गया है। उसकी आवाज़ अभी भी पेशेवर जैसी है। उसने अपने आप को संभाला हुआ है।

तुम्हें पता है, वह फुसफुसाई, मुझे लगता है कि तुम्हें ऐसा और नहीं करना चाहिए। तुम्हें हर बार ठंड में बाहर नहीं जाना चाहिए, जब तुम्हें ... तुम्हें वाकई में अपनी पढ़ाई ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिए, मेरा मतलब है सच में, लगन से। बजाय कि रात भर ...

एक घंटे बाद उसने फिलिप के सोते हुए सिर को अपनी गोद से उठा कर सोफ़े पर रख दिया। उसको जल्दी ही टॉयलेट जाना है। इस मौके पर वह उसका बाथरूम भी थोड़ा बहुत साफ कर देती है। शीशा इतना गंदा है कि वह खुद को भी मुश्किल से पहचान पाती।

सुबह-सुबह उसने अपने ग्राहक को जगाया, उससे ऊपर के तीस यूरो मिल गए। बिना किसी लम्बी-चौड़ी तलाशी के। वह उसको दरवाजे तक छोड़ने आया।

"फिर से एक बार गले मिलने दो" वह बोली और उसे बांहों में भर लिया।

"अरे, अब जाओ भी" वह खुश होकर बोला। "छोड़ो मुझे, तुम तो तोड़ ही दोगी मेरे ..."

फिर उसकी हवा निकल गई, क्यूंकि अगाठः ने उसे सचमुच गले लगा लिया, जितना कस कर हो सका। उसके मुँह की गंध तेज़ और कड़वी है, ठीक उन तनहा आदमियों जैसी, जो सारी रात सपनों से जूझते रहते हैं, जिन्हें वे कभी किसी को सुना नहीं पाएंगे ।

सुबह छह बजे। जब इस समय शहर के बाहरी इलाके की खाली गलियों से अकेले गुज़रती है, तो अगाठः अक्सर अजीब से ख़यालों में डूब जाती है। वह सोचने लगती है कि उसे इस पृथ्वी पर और कितनी देर रहना होगा, उसका आखिरी ग्राहक कब तक रात में सड़क की माँओं के पास जाता रहेगा और वे गहरे सुनहरी रंग की ट्राम कब तक बिना किसी अड़चन के चलती रहेगी, जैसे कि इस दुनिया में कोई कठिनाई ही न हो। और ऐसा कब तक चलेगा कि सूरज एक बिलकुल बादल रहित आसमान में उभरेगा, उस कृत्रिम लहरदार परदे के बावजूद, जो हर सुबह यूरोप के महानगरों के ऊपर इंसानों के बचाव के लिए फैल जाता है।

वक्त की समस्या में उसकी हमेशा रुचि रही है। उम्मीद की समस्या से इसका गहरा संबंध है। अब तक अगाठः करीब-करीब सब उम्मीदों को जान चुकी है, जिन्हें आज के दौर में ज़िंदा रहने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। उसके सभी सहकर्मी इस बात को समझ नहीं पाए हैं। इरमा को जरूर पता है, शायद उस से ज़्यादा, जितना वह जताती है। अगाठः को यकीन है कि इरमा को भी आज रात के लिए एक ग्राहक मिल गया होगा। वह लगभग हमेशा ही उस पिछली गली में सबसे बाद लौटती है, खुश और संतुष्ट दिखती है और उस ज़िन्दगी के दिलचस्प किस्से सुनाती है, जिसमें वह एक रात के लिए हिस्सा ले चुकी है। अगाठः को इरमा का वह किस्सा याद आया, जब एक ग्राहक अपने हाथों से कुछ बनाकर उसके लिए लाया थाः एक लकड़ी से बनाया हुआ छोटा सा अंतरिक्षयान जो कि अगर एटमी युद्ध हुआ तो इन सभी पृथ्वी की माँओं को (या फिर सभी खुशहाल परिवारों को? अगाठः इस से ज़्यादा कुछ याद नहीं कर पाई) अपने साथ ले जाएगा और किसी दूर के ग्रह की सुरक्षा मे पहुंचा देगा। इरमा ने उन्हें उन अजीब रंगीन स्केचों के बारे में बताया था, जो उस ग्राहक के फ्लैट में हर तरफ देखे जा सकते थे। स्केच एक छोटे से हरे रंग के गोले के, जो शान्ति से ब्रह्मांड में घूम रहा है।

जब अगाठः उस बंद पड़े फिश रैस्टोरेंट के पास पहुँचती है, जिसके दरवाजे पर लकड़ी के फट्टे कील से ठुके हुए हैं, वह ऊपर की ओर देखती है और उसे छतों के ऊपर भोर का फीका सा चाँद दिखता है, बादलों के पीछे एक संजीदा, टीन जैसा चेहरा । एक लकड़ी से बना अन्तरिक्षयान, उसने सोचा और उसे इस बेवक़ूफ़ी पर मुसकुराना पड़ा। छोटा सा अनाड़ी कहीं का। सभी के लिए एक अन्तरिक्षयान - या जो भी रहा हो।

अनुवादक : रीमा चौहान